लखीराम ने परने, लिखाया नाम अपना ।
मैं तुम्हारे साथ आऊं, मैं जहान जाना सुपना ॥५३॥

लखी राम बाद में पन्ना में आकर तारतम लेकर सुन्दरसाथ में शामिल हुआ । श्री जी के स्वरूप की पहचान करके उसने कहा मैं कभी आपके चरणों को छोडूंगा नहीं । यह संसार केवल झूठा सपना है ।

रामदास नें उच्छव किया, मिने रहमतर ।
तिनें कहया मैं हों तुम्हारा, जग सुपना दिया कर ॥५४॥

राम दास ने सुन्दरसाथ सहित श्री जी को बड़े प्रेम प्रीत के साथ घर में बुला कर उच्छव रसोई की। श्री जी की चर्चा सुन कर चरणों में समर्पित हो गया और कहा कि यह संसार झूठा सागर है ।

संतावरी दीपा मिली, गोकुल दास की माँ ।
अग्यारह दिन बिलहरी रहे, सब चले होए जमां ॥५५॥

संतावरी, दीपा बाई और गोकुल दास की माता सुन्दर साथ में शामिल हुए । श्री जी बिलहरी में ११ दिन ठहरे । सब सुन्दरसाथ श्री जी के चरणों में वहां इकट्ठे हो गए ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए गढ़ा की बीतक ।
आगे कहो परना की, जो है हुकम हक ॥५६॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह गढ़े की बीतक है । अब पन्ना की बीतक कहता हूं ।

(प्रकरण ५९ चौ० ३३५६)

श्री जी वा महाराजा जी की भेंट

पहिले सूरत सिंह सुनी, बीच राम नगर ।
देवजी को दिखाइया, तो कहया पैगम्बर ॥१॥

सबसे पहले सूरत सिंह ने रामनगर में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी से जाग्रत बुद्ध के ज्ञान की चर्चा करी । फिर उसने दीवान देवकरण को श्री जी के स्वरूप के दर्शन कराये । श्री जी के स्वरूप की पहचान करने के बाद देवकरण श्री जी के आने का सन्देश छत्रसाल जी को देने के लिए मऊ गए । इसलिए देवकरण जी को पैगम्बर कहा है ।

Nijanand App

आए राज रामनगर, तहां बिराजे बरस दोए ।
मिले दीवान देवकरन, ईमान ल्याए सोए ॥२॥

आप श्री जी जब रामनगर पधारे तो दो वर्ष तक वहीं रह कर सुन्दर साथ की आत्मा को जगाया । दीवान देवकरण श्री जी के आने का समाचार पाकर दर्शन करने गए । थोड़ी चर्चा सुन कर ही उसको ईमान आ गया ।

उमंग अंग में आइया, कहों जाए छत्रसाल ।
एह हकीकत सुनके, होवेगा खुसाल ॥३॥

श्री जी की चर्चा से प्रभावित होकर देवकरण के मन में उमंग उठी कि इनका समाचार छत्रसाल को दूं । इनकी महिमा को सुनकर छत्रसाल जी अवश्य प्रसन्न होंगे ।

इन वास्ते रामनगर से, चल के मऊ आए ।
खबर करी महाराज को, दिया पैगाम पोहोंचाए ॥४॥

इस महान कार्य का बीड़ा उठा कर देवकरण छत्रसाल जी को पैगाम देने के लिए मऊ आए । वहां महाराजा छत्रसाल जी के पास जाकर श्री प्राणनाथ जी के आने का समाचार सुनाया और श्री जी के स्वरूप की पहचान कराई कि श्री जी ही विजयाभिनन्द बुद्धनिष्कलंक अवतार हैं, जिनकी आप बारह वर्ष से राह देख रहे हैं ।

नौरंग अकस राखत है, है लड़ाई इसलाम ।
दावत सब ठौरों करी, बुलाओ अपने ठाम ॥५॥

उन्होंने यह भी बताया कि औरंगजेब बादशाह श्री जी से बैर भाव रखता है । उन्होंने हकीकी दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय के सिद्धान्तों के अनुसार शरीयत के अत्याचारों को बन्द करने का संघर्ष छेड़ा है। जिसके लिए देश के सब राजाओं को औरंगजेब के विरूद्ध खड़े होने के लिए कहा पर कोई भी राजा इस कार्य को करने के लिए खड़ा नहीं हुआ । अब आप उनको अपने यहां बुला लीजिए ।

अंकूर असल का, सुनत ही करे चेतन ।
बलदीवान के आगे, बात करी देवकरन ॥६॥

महाराजा छत्रसाल में परमधाम की साकुंडल बाई का अंकूर था । अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी का सन्देश सुनते ही जाग्रत बुद्ध आ गई । बलदीवान जी से भी देवकरण ने श्री प्राणनाथ जी की चर्चा की।

दिल में विचारते, लालदास पहुंचे ।
आए उत्तम दास आनन्द सों, बानी राज की गावते ॥७॥

मन में श्री जी को बुलाने का विचार कर ही रहे थे कि इतने में लालदास जी मऊ में पहुंचे । उमंग भरी आवाज से श्री प्राणनाथ जी की बाणी गाते हुए उत्तम दास जी भी वहीं पहुंच गए ।

Nijanand App

सुने स्लोक महाराज नें, भागवत के कहे लालदास ।
तब श्री जी साहिब के चरन की, दिल में लई आस ।८॥

जब महाराजा छत्रसाल जी ने लालदास जी से श्री मदभागवत के श्लोकों की चर्चा सुनी तो छत्रसाल जी के मन में श्री जी के चरणों में समर्पित होने की आस जाग्रत हुई ।

श्री जी साहिब जी को बुलावने, जाओ देवजी तुम ।
लाल उत्तम को ले जाओ, सामे आए बुलावन हम ॥९॥

तब महाराजा छत्रसाल जी ने देवकरण को श्री जी को मऊ बुलाने के लिए भेजा और कहा कि आप लालदास जी तथा उत्तम दास जी को भी साथ ले जाओ । मैं उनके यहां पधारने पर स्वयं उनके स्वागत के लिए हाजिर रहूंगा ।

तहां से विदा होए के, आए अगरिए पहुंचे ।
रिझाए मिलते राज को, सेवा करी समेत कबीले ॥१०॥

मऊ से चल कर दीवान देवकरण, लालदास और उत्तम दास को लेकर अगरिए पहुंचे । महाराजा छत्रसाल जी से हुई मुलाकात की हकीकत सुना कर प्रसन्न किया । देवकरण जी ने परिवार सहित श्री जी के चरणों की सेवा की ।

चले अगरिए से, परने पहुंचे आए ।
डेरा किया अमराई में, ठौर झंडे की चित्त ल्याए ॥११॥

अगरिए से चल कर स्वामी जी अपने सब सुन्दरसाथ के साथ पन्ना आए । किलकिला नदी के किनारे अमराई घाट पर डेरा किया जो परमधाम से ही निश्चित किया हुआ था । उस स्थान (पदमावती पुरी पन्ना) को देखते ही इस स्थान पर नूरी झंडा लगाने का भाव दिल में ले लिया ।

नदी किलकिला तीर पे, उतरे परमहंस आए ।
तिन में सिरदार अक्षरातीत, देख अपना ठौर सुख पाए ॥१२॥

किलकिला नदी के किनारे पर परमधाम की ब्रह्मसृष्टि यहां पर आई । उन के सिरदार आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने अपने निश्चित स्थान को देख कर आनन्द का अनुभव किया ।

डेरा करत परना के, दौड़े देखत गोंड़ लोक और ।
साध वेरागी कोऊ आए उतरे, देखें हम जाए वा ठौर ॥१३॥

अभी सुन्दरसाथ वहां बैठ ही रहे थे कि वहां जंगल में रहने वाले गौड़ लोग उनके दर्शनों के लिए भाग कर वहां आये। उन्होंने देखा कि वैरागियों का मंडल यहां आया है । हमें वहां जाकर देखना चाहिए । यह सोचकर वे लोग वहां दर्शन करने आए ।

Nijanand App

सब ने आए दरसन करे, कही सुनो सब साध ।
या नदी को जल न पीजियो, याके पिए जाए प्राण व्याध ॥१४॥

वहां के गौड़ लोगों ने आकर श्री जी के दर्शन किए और आवाज देकर कहा ऐ वैरागी साधु महात्माओं! कृपया सुनिए । इस नदी का जल कदापि नहीं पीना । जल पीने से आपकी मृत्यु हो जायेगी । इस नदी का जल जहरीला है ।

तब सब साथ ने मिल के, धोयो चरण अंगूठा राज ।
डारयो चरणामृत नदी में, पीछे नहायो सकल समाज ॥१५॥

यह सुनकर सब सुन्दर साथ ने मिलकर अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के दाहिने चरण कमल का अंगूठा धोकर वह चरणामृत नदी में डाल दिया । तब सुन्दरसाथ ने श्रद्धा पूर्वक नदी में स्नान किया। नदी का जहर भरा जल अमृत के समान हो गया ।

भेजी खबर महाराज को, आप पोहोंचे आए इत ।
कह भेजी महाराज नें, मोहे बने न आवत तित ॥१६॥

तब आप श्री जी ने महाराजा छत्रसाल जी को कहलवा भेजा कि हम यहां आ गए हैं । तब महाराजा छत्रसाल जी ने अपने दरबारी को भेज कर विनती की कि हे मेरे धनी ! मैं इस समय मऊ को छोड़ कर वहां नही आ सकता । औरंगजेब की फौजों के सेनापति अफगन खां ने अस्सी हजार की सेना लेकर मऊ को घेर रखा है । अपार कृपा करते हुए कृपया आप मऊ पधारिए ।

साथ सरूप दे को छोड़ के, आप छड़े पधारें इत ।
तो कारज सब सिध होवहीं, हम पावें सुख नित ॥१७॥

आप महिला सुन्दरसाथ को छोड़कर, छड़े सुन्दरसाथ को लेकर यहां पधारें तब ही मैं आपके चरण कमलों के दर्शन करके परमधाम के अखंड सुखों की प्राप्ति कर सकता हूं ।

तब चले आप परने से, मऊ पहुंचे जाए ।
श्री बाई जी साथ सरूप दे, छोड़ चले सब आहें ॥१८॥

तब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी पन्ना से मऊ पहुंचे । श्री बाई जू राज और सब महिला सुन्दरसाथ को अमराई घाट पर पन्ना जी में ही छोड़ गए ।

मऊ में तिदुंनी दरवाजे, डेरा किया वाहिं ।
राजा भेख बदल के, दरसन कियो ताहिं ॥१९॥

मऊ में पहुंच कर तिदुन्नी दरवाजे के सामने डेरा किया । महाराज छत्रसाल पहली वार भेष बदल कर आए और दर्शन करके चले गए ।

Nijanand App

फेर दूजी बेर भेख बदल के, कर सिकार को साज ।
साथ सबों के बीच में, बैठे थे श्री राज ॥२०॥

फिर दूसरी बार भेष बदलकर और लोहे के वस्त्र, कवच इत्यादि धारण कर शिकारी जैसा सिनगार किया । सब सुन्दरसाथ के बीच वहां आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी विराजमान थे ।

तहां जाए ठाड़े भए, तरह मूढ़ की ल्याए ।
कही बाबा जू राम राम, बाबा बैठो इत आए ॥२१॥

जहां आप श्री जी विराजमान थे,वहां थोड़ा दूर सामने जा कर महाराजा छत्रसाल जी अनाड़ी, अजान व्यक्ति की तरह खड़े हो गए और बोले हे बाबा जू राम राम ! तब श्री जी ने कहा - हे बाबा ! तुम आगे आकर बैठो ।

आए बैठे बिछौने पर, बहुत किनारे दूर ।
कही बाबा और आगे आओ, बैठो इत हजूर ॥२२॥

तो छत्रसाल जहां बिछौने बिछे थे । उसके किनारे पर आकर बैठ गए । तब श्री जी ने फिर कहा - वहां से उठकर मेरे सामने यहां आकर बैठो ।

तहां से उठ आगे गए, तो भी बुलाए आगे ।
कही अब तो परे तुम फंद में, अब कहाँ जाओ भागे ॥२३॥

वहां से उठकर छत्रसाल जी थोड़ा सा आगे खिसके । स्वामी जी ने फिर भी और आगे बुलाया और कहा - अब तो तुम हमारे फंद में फंस गए हो । यहां से भागकर कहां जाओगे ।

तब कही महाराज नें, नहीं ऐसो ब्रह्मांड में कोए ।
जो हम पर फन्दा डारहीं, ए काम बुध जी से होए ॥२४॥

तब छत्रसाल जी ने कहा- ''हे बाबा ! इस ब्रह्मांड में कोई पैदा ही नहीं हुआ है । जो मुझ पर फंदा डाले । ये काम तो केवल विजियाभिनन्द बुध जी ही कर सकते हैं'' ।

उनके हम चाकर हैं, बारह बरस से ।
तिनकी छाप के रूपैया, देखो तुम हम से ॥२५॥

मैं उनका बारह वर्ष से सेवक हूं । उनकी छाप की मोहर का रूपया भी मेरे पास है । जो मैं हर समय गले में पहने रखता हूं । तब श्री जी ने कहा- आओ ! इस जैसे और रूपये मेरे पास देखो । छत्रसाल जी उठ कर आगे गए । तब श्री जी ने अपना दाहिना घुटना ऊपर करते हुए कहा कि बिछे हुए बिछौने को उठा कर देखो । छत्रसाल जी ने जैसे ही उस बिछौने का पल्ला उठाया तो नीचे ढेरों उसी छाप के रूपये देखे, जैसा उनके पास था और गले में पहन रखा था ।

Nijanand App

एह हकीकत कह के, उठे उत थें महाराज ।
गए अपने महल में, कही भई बीतक जो आज ॥२६॥

तब छत्रसाल जी इस हकीकत को देख कर पहचान गए कि श्री जी ही विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार हैं । जिनकी मैं बारह वर्ष से राह देख रहा था । तब वहां से उठे और अपने महलों में जा कर श्री जी की पहचान की हकीकत सबको बताई ।

अन्दर जाए के ए कही, जिन्हें करना होए दीदार ।
सो सबहीं कीजियो, आया परवरदिगार ॥२७॥

और महलों में जा कर यह भी कहा कि जिसने भी श्री जी के दर्शन करने हैं, वह जाकर कर सकता है । पूर्णब्रह्म अक्षरातीत हमारे यहां आए हैं ।

रानी देवकुंवर थी मऊ में, उन सुनी महाराज मुख एह ।
ब्राह्मणियों में भेस बदल के, दरसन कियो इने तेह ॥२८॥

इस समय महाराजा छत्रसाल जी की तीन रानियों में से सबसे बड़ी रानी देवकुंवरी मऊ में थी । जब महाराजा छत्रसाल जी से उन्होंने श्री जी की पहचान के बारे में सुना तो उसने भी ब्राह्मणियों का भेष धारण कर आ कर दर्शन किए ।

फेर जाहिर होए के, आगे भीर चलाए ।
बलदिवान महाराज ने, भेंट करी बनाए ॥२९॥

फिर महाराजा छत्रसाल जी के चाचा बलदिवान ने सब दरबारियों एवं सेना व बाजे गाजे सहित विधिवत आ कर श्री जी के चरणों में प्रणाम किया और सुन्दरसाथ सहित श्री जी को आदर सत्कार के साथ महलों में पधराया ।

वह बखत महाराज को, थी महूम अफगन ।
भई असवारी तैयार, आए लगे चरन ॥३०॥

उधर उसी समय औरंगजेब की सेना के सिपहसलार अफगन खां ने अस्सी हजार सिपाहियों की सेना को लेकर मऊ को चारों तरफ से घेर कर आक्रमण कर दिया । इधर महाराजा छत्रसाल जी के बुन्देला वीरों ने जब रण युद्ध का बिगुल सुना तो तुरन्त वो भी युद्ध करने को तैयार हो गए और महाराजा छत्रसाल जी ने स्वयं अन्दर जा कर रण युद्ध के लिए कवच इत्यादि पहन कर और शस्त्र धारण कर श्री जी के चरणों में आ कर प्रणाम किया और कहा - हे मेरे धनी ! शायद यह मेरा पहला और आखिरी प्रणाम होगा । क्योंकि शत्रुओं की सेना लगभग ८० हजार की सुनी है और मेरे पास केवल पांच सौ योद्धा रण युद्ध के लिए हैं ।

Nijanand App

श्री राज रूमाल लेए के, सिर पर धरा महाराज ।
हाथ धरा सिर ऊपर, होए पूरन मनोरथ काज ॥३१॥

तब आप धाम के धनी अक्षरातीत पारब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी ने अपने सिर का रूमाल महाराजा छत्रसाल जी को पहना कर आर्शीवाद दिया कि जाओ ! धनी कृपा से आपकी विजय होगी और सब मनोकामनायें पूर्ण होंगी और कहा कि जिस तलवार से युद्ध करना है हमें दिखाओ । तब महाराजा छत्रसाल जी ने अपनी तलवार को मयान से निकाल कर श्री जी के चरणों में रखा । स्वामी जी ने उस तलवार को हाथ में लेते हुए अपनी मेहर की दृष्टि से देखा और कहा इस तलवार को ले जाओ । युद्ध करना, पर इससे किसी का खून न करना । युद्ध स्थल में इस पर पड़ी सूर्य की किरणों से तुम्हारे शत्रु अपने ही साथियों को तुम्हारी सेना समझ कर आपस में कट मरेंगे जिससे विजय आपकी होगी ।

इन समै लोग लसकर के कहें, जो हम ए पावें फते ।
तो एही हमारा हक हैं, लोक मांगे ए माजजे ॥३२॥

महाराजा छत्रसाल जी उस तलवार को लेकर अपनी सेना को साथ लेकर सेनापति के रूप में सबसे आगे जाकर खड़े हो गए और साथियों को कहा कि तुम्हें आज पीछे रहना है । विजय हमारी होगी । तब छत्रसाल जी की सेना के सिपाहियों ने कहा कि अगर आज हमारी विजय हो गई तो प्राणनाथ जी ही पूर्णब्रह्म अक्षरातीत हैं । दुनियां वालों की दृष्टि तो केवल चमत्कार पर ही होती है ।

जब उससे फते करके, आए श्री महाराज ।
तब लोकों ने कहया, बिन श्री राज ना होए ए काज ॥३३॥

श्री राजजी महाराज की कृपा से महाराजा छत्रसाल जी की विजय हुई और सांयकाल तक अफगन खां अपने साथियों के साथ मारा गया । बची हुई सेना भाग गई । तब सब जनता और सेना ने कहा कि प्राणनाथ की मेहर से ही यह सब कुछ हुआ है ।

फेर श्री महाराजें देखिया, पट जो तारतम ।
अब बहेवार छुटत मुझसे, जाग खड़ी आतम ॥३४॥

तब महाराजा छत्रसाल जी ने श्री जी के मुखारबिन्द से जाग्रत बुद्ध की तारतम वाणी के द्वारा क्षर, अक्षर, अक्षरातीत तथा परमधाम के पच्चीस पक्षों को देखा, सुना, समझा तो आत्म जाग्रत हो गई और श्री जी के चरणों में समर्पित होकर कहा अब मुझ से यह राज पाट नहीं होगा ।

Nijanand App

मऊ सेती परना मिने, पहुंचे श्री जी साहिब ।
मंझली नें पहिचानिया, सेवा करी तब ॥३५॥

इसके पश्चात श्री जी मऊ से चल कर फिर वापिस पन्ना में पधारे । महाराजा छत्रसाल जी का बाकी परिवार चोपड़े की हवेली में रहता था । परिवार के लोगों ने श्री जी के अमराई घाट पर दर्शन किए । मंझली रानी ने श्री जी की चर्चा सुनते ही पहचान लिया कि यही मेरे धाम धनी हैं और चरणों में समर्पित होकर तन, मन, धन से खूब सेवा की ।

और सब अन्दर की, रहे पीछे तिन ।
जब महाराज आए पहुंचे, सबों बातां करी आगे इन ॥३६॥

मंझली रानी की देखा देखी सब परिवार वालों ने भी तारतम लिया और सेवा की । जब महाराजा छत्रसाल जी मऊ से चोपड़े की हवेली में पहुंचे तो महल के सब लोगों ने श्री जी की पहचान की बातें की ।

गिरे दंडवत आए के, सनमुख साथ में पास ।
सीस धरयो दोऊ चरन पर, दीनो जगत निकास ॥३७॥

मऊ से छत्रसाल जी अपने राज की व्यवस्था करके पन्ना आये और अमराई घाट पर आकर सब सुन्दरसाथ के सामने श्री जी के चरणो में दंडवत प्रणाम किया और अपना सिर धनी के चरणों में रख दिया तो श्री जी की मेहर से उनके अंदर जाग्रत बुद्ध ने प्रवेश किया ।

आए महाराज उत से, रसोई के बखत ।
अस्नान कर ठाढ़े हते, श्री जी साहिब जी तित ॥३८॥

जब महाराजा छत्रसाल जी मऊ से आये तो दोपहर की रसोई का समय हो चुका था । आप श्री जी स्नान कर वस्त्र धारण कर चुके थे ।

कनातें ठाढ़ी करीं, बैठे श्री महाराज ।
थाल श्री बाई जी ल्याई, आगे धरी श्री राज ॥३९॥

और वहां एक तरफ माताओं, बहनों के भोजन की व्यवस्था के लिए कनातें खड़ी हो रही थी । महाराजा छत्रसाल जी श्री जी के चरणों में वहीं बैठ गए । श्री बाई जू राज आरोगने के लिए थाल परोस के ले आई।

चार जने महाराज संग, लिया इत प्रसाद ।
ईमान ल्याए अरस पर, ए सेवा करी आद ॥४०॥

महाराजा छत्रसाल जी के साथ चार अंग रक्षक भी आए थे । श्री जी के आरोगने के पश्चात महाराजा छत्रसाल जी ने अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी का प्रसाद अपने साथियों के साथ ग्रहण किया ।

Nijanand App

कुली दज्जाल कांपिया, किया बड़ा सोर ।
ए निहचें मोकों मारेंगे, इन दोऊ से चले न मेरा जोर ॥४१॥

अब उधर माया का दज्जाल अबलीस रूप थर-थर कांपने लगा कि अब प्राणनाथ जी मुझे अवश्य ही मार डालेंगे । इन दोनों के सामने मेरा कुछ नहीं चलेगा ।

काहू काहू के दिल में, कलयुग आए बैठा ।
बदफैली दिल में करी, जो था सेना में जेठा ॥४२॥

दज्जाल, अबलीस उसी के मन में बैठता है, जिसका ईमान कच्चा होता है तो छत्रसाल जी के चाचा बलदीवान के मन में बेईमानी आ गई और जब ये सुना कि महाराजा छत्रसाल ने प्राणनाथ जी का झूठा प्रसाद लिया जो बुन्देला परिवार के विरूद्ध था तो खूब शोर-शराबा करने लगे ।

डगावने महाराज को, बहुत करी दज्जाल ।
ना भए राज तरफ दलगीर, हमेसा रहे खुसहाल ॥४३॥

महाराजा छत्रसाल जी अमराई घाट से जब चौपड़े की हवेली में पहुंचे तो वहां चाचा बलदीवान ने छत्रसाल जी के साथ बहुत अनुचित शब्दों के साथ व्यवहार किया पर छत्रसाल जी पर उसका कोई असर नहीं हुआ और उन्होंने स्पष्ट कह दिया चाचा ! ना मुझे तेरे राज पाट की फिक्र है । ना कुटुम्ब-कबीले की। मैं श्री जी के चरणों से अब अलग नहीं हो सकता ।

हिंमत परवत सिंह, और साह रूप ।
और नारायन दास, और सकत सिंह अनूप ॥४४॥

महाराजा छत्रसाल जी के खास दरबारी हिम्मत सिंह, पर्वत सिंह, शाहरूप, नारायण दास, सक्त सिंह और अनूप भी श्री जी की पहचान कर सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

और ईमान ल्याइया, ए जो दुरग भान ।
जगत सिंह सुन दौड़िया, ए ल्याया ईमान ॥४५॥

दुर्गभान और जगत सिंह भी बड़े ईमान के साथ श्री जी के चरणों में समर्पित हो कर सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

सम्बत सत्रह सै चालीसे, पधारे परना में ।
सेवा श्री महाराजें करी, क्यों कहूं इन जुबां सें ॥४६॥

आप श्री प्राणनाथ जी सम्वत् १७४० में जब पन्ना जी पधारे तो छत्रसाल जी ने श्री जी के स्वरूप की पहचान कर युगल स्वरूप अक्षरातीत के रूप में जो सेवा की, वह इस जुबां से वर्णन नहीं की जा सकती।

Nijanand App

काहू करी ना करसी, ए जब को उपज्यो इण्ड ।
सब की सेवा सास्त्रों में, लिखी है जो ब्रह्माण्ड ॥४७॥

जब से यह ब्रह्मांड बना है बहुत योद्धा, वीरों ने और लोगों ने अपने गुरू धारण किए और गुरूओं की सेवा की । जिन का वर्णन शास्त्रों में आता है जैसे एकलव्य ने द्रोणाचार्य को धारण किया, शिवा जी ने गुरू रामदास को धारण किया, रामभगवान ने वशिष्ठ जी को धारण किया इत्यादि के नाम लिखे हैं।

जैसे जिन पगले भरे, तैसा ही लिखा तिन ।
इन हिसाब कर देखियो, खास गिरोह मोमिन ॥४८॥

छत्रसाल जी की सेवा के सामने तुलना करके देखें तो सब फीके पड़ जाते हैं । क्योंकि उन सब लोगों ने गुरू भाव से अपना तन और धन ही समर्पित किया पर छत्रसाल स्वामी जी को अपने आतम के धनी पारब्रह्म अक्षरातीत पहचान कर और अपने आपको उनकी एक अंगना मान कर पतिव्रत भाव से समर्पित हुए और अपना सब कुछ उनके चरणों पर वार दिया ।

चौपड़े की हवेली मिने, तहां पधराए श्री राज ।
चले आप सुखपाल ले, कांध पर कुंवर महाराज ॥४९॥

महाराजा छत्रसाल जी ने अपने निवास स्थान चौपड़े की हवेली में श्री प्राणनाथ जी को जब पधराया तो सुखपाल में बिठा कर ले गए और सुखपाल को अपने कंधों पर उठा कर चौपड़े की हवेली तक ले गये।

सुखपाल धरी जाए द्वार में, अत उछरंग होए ।
चले आप भीतर को, दिन मान्यो सुफल जो सोए ॥५०॥

हवेली के मुख्य द्वार पर जा कर सुखपाल को नीचे उतारा उस समय महाराजा छत्रसाल जी के उमंग की कोई सीमा नहीं थी । महाराजा छत्रसाल जी ने श्री जी व बाई जू राज को ले कर जब प्रवेश किया तो उन्होंने आज का दिन सफल व धन्य माना ।

भीतर जाते द्वार में, रानी मझली ने आए ।
किया पांवड़ो साडी को, अत प्रेम दिल में ल्याए ॥५१॥

जैसे ही श्री जी ने बाई जू राज सहित प्रवेश किया तो मझली रानी ने दिल में बड़ा प्रेम भाव लेकर अपनी साड़ी का पांवड़ा किया ।

तब महाराजे ए कही, तू मेरे आगे क्यों होए ।
यों कहि उठाई साड़ी को, कियो पांवड़ों पाग को सोए ॥५२॥

ये देख कर महाराजा छत्रसाल जी ने मंझली रानी से कहा तुम तो मुझे से भी आगे हो गई । ठीक है कि प्राणनाथ जी सब के धाम धनी हैं पर पांवड़े पर पहले अधिकार मेरा है । यह कह कर साड़ी उठा कर अपनी पाग को बिछा कर पांवड़ा कर दिया ।

Nijanand App

पलंग बीच में जाएगा, रही कछुक पास ।
तहां बिछाई साड़ी को, बैठे सिंहासन खास ॥५३॥

पाग का पांवडा सिंहासन तक नहीं पंहुच सका । पाग व सिंहासन के बीच में कुछ जगह रह गई । वहां रानी ने पुनः अपनी साड़ी बिछा दी । उस पर चल कर धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी भाव और प्रेम से सजाये सिंहासन पर आकर विराजमान हो गए ।

इधर जब बुंदेला जाति के प्रतिष्ठित लोगों और बल दीवान ने देखा कि महाराजा छत्रसाल जी ने बुंदेला परिवार की रीति के विरूद्ध कार्य किया है जो महारानी ने अपने गुरू के चरणों में साड़ी का पांवड़ा किया है क्यों कि आम लोग तो प्राणनाथ जी को छत्रसाल जी के गुरू ही जानते थे तो अनेकों प्रकार की अनर्गल बातें करने लगे । इस बात को सुन कर महाराजा छत्रसाल जी ने यह विचार किया कि आरती पूजन से पहले इनके मन की भ्रान्ति को दूर करना ठीक रहेगा । यह सोच कर सारी जनता एवम् दरबारियों को प्रेम पूर्वक विनय करके कहा कृपया आप अपना अपना स्थान लेकर बैठ जाइए ।

तब महाराजा छत्रसाल जी ने सबको बड़े प्रेम से समझाया आप लोग व्यर्थ की बातें कर रहे हो । मेरे घर जो आज पधारे हैं, मैं उनका परिचय आपको कराता हूं ।

मेरे घर पूर्णब्रह्म, अक्षरातीत, सच्चिदानन्द जो क्षर और अक्षर ब्रह्म से भी परे हैं, न्यारे हैं और सदा सत सुख और अखंड आनन्द के देने वाले हैं । वो पधारे हैं । ना तो यह मेरे गुरू हैं,ना ही मैं इनका चेला हूं क्यों कि गुरू और चेले का सम्बन्ध शरीर तक होता है । ना यह मेरे भगवान हैं और ना ही मैं इनका भक्त हूं । क्यों कि भक्त और भगवान का रिश्ता भी मन, चित्त और देह तक होता है । यह तो मेरे आत्म के धनी अक्षरातीत, श्री राज जी महाराज हैं । मैं इनकी एक आतम, अंगना हूं । इनके और मेरे सम्बन्ध को अर्थात् पारब्रह्म और आत्माओं के सम्बन्ध को संसार में वेद, शास्त्र, पुराण और त्रिदेवा भी वर्णन नहीं कर सके । इसलिए शिव सनकादिक आदि काल से इनकी चरण धूलि की इच्छा को रखते हैं पर शेष, महेश, दिनेश आदि कोई भी इनका पारावार नहीं पा सका । आदि नारायण, ब्रह्मा आदि भी देवों में अगम-अगम कह कर हार गए तो निगम-निगम कहना पड़ा । वो भी इनकी जानकारी ना दे सके और इनको खोज-खोज कर, थक कर बैठ गए ।

इसमें कोई शक की बात नहीं है कि मेरी आतम भी इस माया के तन में आ कर भूल जाने के कारण से भटक रही थी क्यों कि इस झूठी माया का सारा ब्रह्मांड और यह तन ब्रह्म, परमात्मा से दूर करने वाले हैं । पर मेरे प्राणों के प्रीतम अखंड धाम के धनी जो कभी भी अपनी आत्माओं से जुदा नहीं हो सकते, उन्होंने इस संसार में कलियुग में आना पहले से ही शास्त्रों में लिखवा दिया था । अपनी आत्माओं के कारण ही परमधाम से नश्वर जगत में आए हैं । मेरे इस तन के अन्दर भी उनकी एक आतम (साकुण्डल) होने के कारण से मैं उनकी मूल परमधाम की अंगना थी इसलिए जिस प्रकार दुल्हा, दुल्हिन को लेने जाता है,मुझे अपनी अंगना जान कर लेने के लिए मेरे घर पधारे हैं । यह मेरा उनके साथ सम्बन्ध अखंड परमधाम का है जो कभी टूट नहीं सकता । अपने साथ श्यामा महारानी स्वरूप श्री ठकुरानी जी को साथ लेकर आत्माओं को ढूंढ कर निकालने के लिए और जो आत्माएं मिल चुकी हैं उनको साथ लेकर यहां पधारे।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश त्रिदेवा ने जो सारे जीवों को माया में ही फंसे रहने का कर्मकाण्ड रूपी जाल बिछा रखा है और उसे पालन करने के लिए अनेकों भय बना रखे हैं ऐसे भयंकर कर्मकाण्डों के फांसों से श्री प्राणनाथ जी छुड़ा कर अखंड मोक्ष प्रदान करते हैं । ऐसे अपने प्राणनाथ के चरणों में एक अंगना के भाव से मैंने या मेरी मंझली रानी ने जो पांवड़ा किया है, उसमें कुछ भी अनुचित नहीं है । जो होना चाहिए उससे यह थोड़ा ही किया है । अपने इस प्राणनाथ पर मैं साकुण्डल की आतम वारी-वारी (कुर्बान) जाती हूं और इस भाव से मैंने उनको सिंहासन पर पधराया है ।

ऐसे शब्दों से समझाने के बाद सारी जनता और सम्बन्धी लोग चकित रह गए और चुप होकर बैठ गए ।

Nijanand App

अपनो आपा सब दियो, और दियो सब साज ।
आरती निछावर करके, कही धन धन दिन है आज ॥५४॥

महाराजा छत्रसाल जी ने श्री प्राणनाथ जी के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया । आरती में सब कुछ न्यौछावर करके उन्होंने कहा ''आज का दिन धन्य है'' ।

एही टीका एही पांवड़ो, एही निछावर आए ।
श्री प्राणनाथ के चरन पर, छत्ता बलि बलि जाए ॥५५॥

मेरा तन, मन, धन एवं सब कुछ न्यौछावर करना ही टीका है, पांवड़ा है और यही न्यौछावर कर मैं छत्रसाल अपने प्राणनाथ के चरणों पर वारी-वारी जाता हूं ।

श्री बाई जी को जोड़े राज के, बैठाए कर सनेह ।
कहनी में न आवहीं, लगो जुगल सों नेह ॥५६॥

तब छत्रसाल जी ने श्री तेजकुंवरी बाई को स्नेह एवं आदर पूर्वक श्री जी के साथ सिंहासन पर बैठाया। इस प्रकार सुन्दर युगल स्वरूप को निहार कर छत्रसाल जी प्रेम व आनन्द में विभोर हो गए । जिसका वर्णन इस मुख से नहीं किया जा सकता ।

साथ समस्त के बीच में, जुगल धनी बैठाए ।
कही तुम साक्षात अक्षरातीत हो, हम चीन्हा तुमें बनाए ॥५७॥

सब सुन्दरसाथ के बीच मध्य में सिंहासन पर युगल स्वरूप श्री जी एवं बाई जू राज को पधरा कर छत्रसाल जी ने कहा कि हे मेरे धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज ! आप ही साक्षात् अक्षरातीत, पारब्रह्म, धाम के धनी, श्री राजजी व श्यामा महारानी हो मैंने आपको अच्छी तरह से पहचान लिया है ।

श्री ठकुरानी जी साथ संग ले, पधारे मेरे घर ।
धनी बिना तुम्हें और देखे, सो नही मिसल मातवर ॥५८॥

आप श्यामा जी के स्वरूप श्री बाई जू राज, ठकुरानी जी को संग लेकर आज मेरे घर पधारे हो । आपको जो धाम के धनी के बिना अपना परमात्मा, प्रभु, महाप्रभु कहता है तो वह निश्चय ही परमधाम की ब्रह्मसृष्टि नहीं है और यदि कोई आपको सन्त, कवि, अच्छे वैरागी के रूप में देखता है तो वह संसार का कोरा जीव है ।

अब तो कछू ना हमारो, दे चुके हम सीस ।
आपा रहयो न आप बस, करो जानों सो बकसीस ॥५९॥

हे धनी ! अब हमारे बस में हमारा कुछ भी नहीं रह गया । हमने अपना शीश तक आपको अर्पित कर दिया । अपना आपा (सर्वस्व) भी हमारे पास नहीं रह गया । आप जो भी उचित समझें मुझे संसार में रहने के लिए बख्शीश कर दें ।

Nijanand App

तब बोले श्री राज जी, देखे राणा पातसाह सब ।
पर जो कछू करनी अंकूर की, सो इत देखी हम सब ॥६०॥

तब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने कहा कि मैंने हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े हिन्दू राजा और बादशाह को टटोला है पर किसी में भी परमधाम का अंकूर नहीं देखा । आपके तन में परमधाम के अंकूर का बल बता रहा है कि आप परमधाम की आतम हो ।

आगे साध सन्तों ने, कह्यो गुरू सिस्य को धरम ।
सोतो अब इहाँ भयो, उड़यो सबों को भरम ॥६१॥

दुनियां को समझाते हुए श्री प्राणनाथ जी ने कहा कि जब से यह ब्रह्मांड बना है । हजारों सन्त महात्माओं ने गुरू शिष्य के धर्म का वर्णन ग्रन्थों में किया है जो आज जाहेर हो रहा है और ब्रह्मसृष्टि की करनी को दुनियां एक भ्रम मानती थी । वह भ्रम सब का टूट गया । चाहे जो कुछ हो जाये पर वह प्राणनाथ जी के साथ अपने धनी जैसा व्यवहार करके दिखाएंगी ।

पहिले दाता हम भए, गुरू को दीनों सीस ।
पीछे दाता गुरू भए, सब कछु कियो बकसीस ॥६२॥

महाराजा छत्रसाल जी ने कहा कि पहले सतगुरू के चरणों में अपना शीश सर्वस्व रख देने वालों में मेरा पहला नाम है । आप सर्वशक्तिमान, सब विध सामर्थ धाम धनी सदा सत सुख के दातार हैं । जिन्होंने कृपा करके बाद में सब कुछ मुझे दे दिया (इसके पश्चात् महाराजा छत्रसाल जी ने आरती पूजन किया और उसके बाद ५६ प्रकार के व्यंजन से सुसज्जित थाल आरोगाया और सबने प्रशाद लिया) ।

साखी : बीतेगा उनतालीसा दगेगा चालीसा, तब कोई होसी मरद मरद का चेला ।
नानक गुरू दिखावे सांई, सच सच दी वेला ॥

गुरूनानक देव जी ने भी अपनी भविष्य वाणी में यह कहा था जब सम्वत् १७३९ (सन् १६८२ ई०) बीतेगा और सम्वत् १७४० (सन् १६८३) प्रारम्भ होगा, तब कोई मर्द सूरमा किसी मर्द का दुनियां में शिष्य होगा अर्थात् मर्द एक पुरूष तो केवल पारब्रह्म ही हैं और दूसरे उनकी आत्मायें भी उनका ही स्वरूप हैं तो इस दुनियां में वह प्राणनाथ और छत्रसाल जी का मिलन हुआ । हे मेरे सच्चे स्वामी ! मुझे भी वह सत्य शुभ बेला का समय दिखाना अर्थात् मुझे भी उस समय मनुष्य तन देना ।

बिजिया अभिनन्द बुध जी, ब्रह्म सृष्ट सिरताज ।
हाथ हुकम छत्रसाल के, दियो सो आपनो राज ॥६३॥

गुरू नानक देव जी की कही हुई भविष्यवाणी की साखी यहां सत्य हुई । जो अक्षरातीत पारब्रह्म विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार ब्रह्मसृष्टियों के सिरताज (मुकुटमणि) प्रगट हुए हैं । उन्होंने श्री छत्रसाल जी के हाथ अपना हुकम देकर सत्य धर्म दीन-ए-इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय चलाने का आदेश दिया ।

Nijanand App

साखी कहके थाल ले, तिलक करयो श्री राज ।
भाल माहिं छत्रसाल के, कही आप बैठो महाराज ॥६४॥

उक्त साखी कह कर श्री प्राणनाथ जी ने छत्रसाल जी के हाथ से थाली लेकर छत्रसाल जी के माथे पर तिलक लगा कर उन्हें ''महाराजा'' की शोभा प्रदान की और कहा - ''महाराजा छत्रसाल जी आइए! विराजिए !'' छत्रसाल जी ने स्वामी जी को प्रणाम करके अपनी निष्ठा का प्रमाण दिया ।

बजी बधाई नृपत के, करी आरती प्रान ।
कही सब जन महाराज जू, करयो प्रणाम प्रमान ॥६५॥

राजतिलक की खुशी में छत्रसाल जी को बधाईयां मिली । गीत गाए गए । अपने प्राण प्रीतम श्री प्राणनाथ जी की आरती उतारी । सब प्रजा सहित महाराजा छत्रसाल जी ने स्वामी जी के चरणों में प्रणाम करके अपनी निष्ठा का प्रमाण दिया ।

सकुण्डल सोभा भई, प्रगट भई पहिचान ।
छत्रसाल छत्ता हुआ, छिपे सबे सुलतान ॥६६॥

साकुण्डल सखी के रूप में महाराजा छत्रसाल जी को शोभा मिली और श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान सब को हो गई । श्री जी की अपार कृपा से महाराजा छत्रसाल धर्म के रक्षक हुए । उनकी शक्ति को देखकर मुसलमान सुल्तान भी डरने लगे ।

छत्रसाल छत्ता हुआ, कहूया सुन्दर बाई जोए ।
आप दिखावत आपनी, कही सकुण्डल सोए ॥६७॥

महाराजा छत्रसाल छत्र के समान हिंदू धर्म के रक्षक हुए । श्यामा जी (सुंदरबाई) के अवतार श्री देवचन्द्र जी की भविष्य वाणी सत्य हुई । साकुण्डल सखी मिली और छत्रसाल जी ने ब्रह्मसृष्टि के अंकूर होने जैसा समर्पण कार्य करके दिखाया ।

अरूगावने श्री राज को, मेवा मिठाई पकवान ।
आनन्द इन सुख को, कहूयो न जाए परमान ॥६८॥

तब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी और बाई जू राज को थाल भोग आरोगाया गया । जिसमें अनेक प्रकार के स्वादिष्ट मेवे मिठाइयां पकवान आरोगाए । उस आनन्द का वर्णन नहीं हो सकता ।

फेर और बेर बुलाए, भीतर लई सुखपाल ।
एक तरफ आप उठाए, एक तरफ ठकुरानी होए खुसाल ॥६९॥

महाराजा छत्रसाल जी ने स्वामी जी की फिर भी कई बार महल में पधरावनी की । उसी प्रकार सुखपाल को एक ओर स्वयं महाराजा व दूसरी तरफ महारानियां कंधे पर उठा कर लाए ।

Nijanand App

पधराए अपने घरों, अत हेत कर प्यार ।
भूषन पेहेराए भली भांत सों, कियो बड़ो मनुहार ॥७०॥

बड़े प्रेम और आदर सहित अपने महल में श्री जी एवं बाई जू राज को पधराया । अनेकों प्रकार के वस्त्र, आभूषण पहना कर श्रृंगार किया ।

चीन पेहेराई नवघरी, ले धरी आगे ।
हीरा मानिक चूनी, तले पहुंची लटके ॥७१॥

रेशमी धागे में पिरोई गई नवघड़ी महाराजा ने श्री जी को अर्पित की । हीरे और माणिक के छोटे-छोटे टुकड़ों से जड़ित आभूषण, पहुंची, श्री जी को पहनाई गई ।

और दुगदुगी सांकर, तले हीरा मानिक ।
पहुंची जड़ाव हीरे की, रीझ पेहेनाई हक ॥७२॥

स्वामी जी के सुन्दर कण्ठ में सोने की कण्ठी, जिसके नीचे रत्न जड़ित दुगदुगी झूमती हुई शोभित थी पहनाई । दुगदुगी में हीरा, माणिक लहराते थे । छत्रसाल ने स्वामी जी को प्रेम-विभोर होकर आभूषण पहनाये।

और भूषन कई भांत के, ले आगे धरे आए ।
और मंझली ने अपने भूषन, श्री बाई जी को पहिनाए ॥७३॥

छत्रसाल जी ने अनेकों प्रकार के सुंदर भूषण स्वामी जी की सेवा में प्रस्तुत किए । मंझली रानी ने अपने अति सुंदर आभूषण श्री बाई जू राज को पहना दिऐ ।

और साथ ने इतहीं, सेवा करी बनाए ।
सो इन जुबां केती कहों, कहनी में न आए ॥७४॥

सुन्दरसाथ ने भी भांति-भांति के भूषण सेवा में समर्पित किए । सुन्दरसाथ की उन भावनाओं का वर्णन नहीं किया जा सकता । उनकी सेवा शब्दों से परे है ।

तन मन धन सों, कियो सब निछावर ।
हाथ जोड़ ठाढ़े भए, सिफत भई सब पर ॥७५॥

महाराजा छत्रसाल जी तन, मन, धन सब न्यौछावर कर हाथ जोड़ कर सेवा में खड़े हुए । महाराजा छत्रसाल जी ने ऐसा आदर पेश किया कि उनकी प्रशंसा का चारों ओर डंका बज गया ।

पहिचान पूरी करी, सेवे धनी कर धाम ।
साथ जो अन्दर रहे, तिन सेवा करी तमाम ॥७६॥

उन्होंने श्री प्राणनाथ जी को अपनी आतम के धाम धनी श्री राज जी महाराज के स्वरूप में पहचान कर सेवा की । महल के अन्दर रहने वाली रानियों और परिवार जनों ने भी श्री जी की सेवा पूरे भाव से की ।

Nijanand App

देखा देखी महाराज के, ल्याया जो ईमान ।
बस बसा छाती पर, करता था सैतान ॥७७॥

महाराजा छत्रसाल जी की इस कुर्बानी और भाव को देखकर बलदीवान जैसे लोग ईमान तो ले आए पर उनके दिल की बेईमानी ने उनका पूरा साथ निभाया ।

बात छिपाई कुरान की, आवते महाराज सो आप ।
सो पहिचान के वास्ते, इनको प्रकट करने प्रताप ॥७८॥

आप श्री प्राणनाथ जी ने महाराजा छत्रसाल जी से कुरान के विषय में कोई भी चर्चा नहीं की कि कहीं बलदीवान जी को अधिक भ्रांति न हो जाए । समय आने पर कुरान के रहस्यों की पहचान हो जाने पर महाराजा छत्रसाल इसकी महिमा को स्वयं सारी दुनियां के सामने जाहिर करेंगे । इसलिए ऐसा किया गया ।

बैठे आप बंगले मिने, बांचे लाल किताब ।
आप करत है माएनें, भाई दो चार बैठे हिसाब ॥७९॥

एक दिन बंगला जी की परिकरमा में विराजमान स्वामी जी के सन्मुख लालदास जी कुरान पढ़ रहे थे । श्री जी स्वयं उसके अर्थ सबको बता रहे थे और सिर्फ दो चार सुंदरसाथ ही साथ बैठे थे ।

बैठे सब एकान्त में, ऐसे में आए महाराज ।
दूर बैठ मन विचारिया, यों क्यों बैठे हैं आज ॥८०॥

सभी एकांत में बैठे हुए खुलासा किताब की चर्चा श्री जी के मुखारबिंद से सुन रहे थे, उसी समय महाराजा छत्रसाल जी आ गए । उन्होंने दूर बैठ के मन में विचार किया कि आज ये सब लोग इस तरह क्यों बैठे हैं ।

बुलाए के लालदास को, पूछी राजा ने एह ।
तुम कहा गुप्त बांचत हो, हमको कहिए तेह ॥८१॥

महाराजा छत्रसाल जी ने लालदास जी को इशारे से बुलाया और पूछा कि आप इस तरह बैठ कर क्या पढ़ रहे हो । वह हमें भी बताइये ।

तब कह्या उत लाल नें, हमको हुकम नाहिं ।
पूछें जाए हजूर में, तब कहें तुमें आहिं ॥८२॥

लालदास बोले यह बताने का मुझे हुकम नहीं है । श्री जी से पूछ कर आपको बता सकता हूं ।

Nijanand App

जाए लालें पूछी हजूर में, तब बुलाए हजूर महाराज ।
कही ए जो बात कुरान की, तुम सों छिपाई लों आज ॥८३॥

लाल दास जी ने स्वामी जी से जाकर पूछा तब श्री जी ने छत्रसाल को अपने पास बुलाया और कहा कि कुरान के छिपे भेदों के रहस्य, जो हमने आज दिन तक आपसे छिपा रखे थे ।

सो ए अब कहत हैं, इनमें बात अपनी है सब ।
महम्मद साहिब कुरान ल्याए, सो सब अपनो सबब ॥८४॥

उन सब रहस्यों को अब आपके सामने जाहेर करते हैं । कुरान में सब हमारी अपनी ही बातें लिखी हैं । मुहम्मद साहिब हमारे लिए ही कुरान लेकर पधारे थे ।

यामें अपनी बीतक सब है, श्री देवचन्द्र जी को मेरे तेरो नाम ।
जा दिन जो बीती हम तीनों में, सो सब लिखी तमाम ॥८५॥

कुरान के अंदर अपनी सारी बीतक लिखी है । श्री देवचन्द्र जी का, हमारा और आपका नाम भी इशारे में लिखा है और जिस दिन जो घटनायें हम तीनों के जीवन में घटित हुई हैं । वह सब भी इस कुरान में लिखी हुई हैं ।

ए बात सुनत महाराज को, जोस जो बढ़यो जोर ।
ए वस्त प्रकट करके, करों खेल में सोर ॥८६॥

कुरान के छिपे भेदों के रहस्यों को और जागनी लीला की महिमा सुनकर महाराजा छत्रसाल जी को आवेश आ गया । उन्होंने निश्चय कर लिया कि कुरान की इस महत्वपूर्ण बात को लेकर दुनियां में हिन्दू और मुसलमानों को श्री प्राणनाथ जी के झण्डे के तले दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय में लाना अब कुछ कठिन नहीं है ।

बात हमारे घर की, क्यों छिपावे हम ।
मुसलमान हमें कहा करें, ल्यावें तले तुमारे हुकम ॥८७॥

कुरान में अपने परमधाम की ही बातें लिखी हैं । हम इसको क्यों छिपाये रखें । मुसलमान लोग हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं । हे श्री जी ! मुसलमानों को लाकर मैं आपके चरणों में झुका दूंगा ।

बांधी तरवार साह सों, सो तुमारे चाकर होए ।
हक हादी मोमिन बिना, और न देखे कोए ॥८८॥

इसके पश्चात महाराजा छत्रसाल जी ने कहा "हे मेरे धनी ! आपका सच्चा साथी होने के नाते से औरंगजेब से संघर्ष करने के लिए आज तलवार कस ली है । आप मेरे धाम के धनी हैं । आपके और सब सुन्दर साथ के बिना सारा संसार मिथ्या है" ।

Nijanand App

और बात हमारी ए सुनो, जो ए बात सुन ल्यावे ईमान ।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान ॥८९॥

हमारी एक बात और भी सुन लीजिए जो भी कुरान में लिखी बातों पर विश्वास करके आपके चरणों में आ जायेगा । छत्रसाल उस पर अपना तन, मन, धन न्यौछावर कर देगा ।

ए बात सुन राजा की, आप हुए खुसाल ।
जाहिर किया दीन को, बकसी किताब हाल ॥९०॥

महाराजा छत्रसाल जी की ऐसी महान बातें सुन कर श्री प्राणनाथ जी बहुत प्रसन्न हुए । सत्य धर्म दीने हकीकी निजानन्द सम्प्रदाय को सब जगह फैलाने की भावना के कारण श्री जी ने बड़ा कयामतनामा वाणी को महाराजा छत्रसाल जी के नाम से ही जाहिर किया ।

ए बात राजा के घर में, कोई कोई कों न आई नजर ।
परचो लीजे इनको, ए हिन्दू बांचे क्यों कर ॥९१॥

छत्रसाल जी के महल, परिवार के अन्य लोग तथा चाचा बलदीवान को विशेषकर कुरान सम्बन्धी विचारों की समझ नहीं आई तो बलदीवान जी ने सोचा इनकी भली प्रकार परख करें कि यह हिन्दू होकर कुरान क्यों पढ़ते हैं ?

तब बुलाए बलदीवान ने, काजी मुल्ला पण्डित ।
तिन सों तहकीक करने, चरचा कराई इत ॥९२॥

तब बलदीवान ने श्री जी के ज्ञान की हकीकत की पहचान लेने के लिए काजी, मुल्ला और पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए बुलाया । उनके द्वारा इनके ज्ञान की हकीकत निश्चित करने के लिए चर्चा कराई गई ।

आया काजी महोबे का, नाम अब्दुल रसूल ।
तिन सेती चरचा भई, कुरान की मकबूल ॥९३॥

महोबे का रहने वाला काजी अब्दुल रसूल आया । औरंगजेब के शासन में अब्दुल रसूल महोबे में सारे भारत वर्ष के मुसलमानों को कुरान की तालीम देता था अर्थात् सब मुसलमानों का उस्ताद था । कुरान के गूढ़ रहस्यों पर उसके साथ श्री जी की चर्चा हुई ।

तिन सेती पूछाइया, कुरान का सवाल एक ।
एकै जबाब दीजियो, जिन बोलो जवाब अनेक ॥९४॥

आम जनता की सभा में अब्दुल रसूल और श्री जी को सादर आसन दिए गए और वार्तालाप हुई। स्वामी जी ने अब्दुल रसूल से कुरान का एक प्रश्न पूछा और कहा- कुरान के आधार पर इसका एक ही जवाब देना, अनेक नहीं । प्रश्न का दो टूक उत्तर दीजिएगा । इधर उधर से घुमा फिरा कर बातें न करना।

Nijanand App

मेरे आगे कुरान की, कोई मार न सके दम ।
उमी होए पूछत हो, कुरान की बातें तुम ॥९५॥

काजी ने कहा मेरे सामने आज तक कुरान को जानने का या उसका ज्ञान रखने का दावा किसी ने नहीं किया । मुझे लगता है कि आप उमी, अनपढ़, कुरान को बिना पढ़े हुए मुझसे कुरान की बात पूछ रहे हो ।

कुरान तमाम तपसीर, मुझको रहे याद ।
मुझ सेती कई खलक, पढ़के पहुंची मुराद ॥९६॥

कुरान की सारी वाणी अर्थ व्याख्या सहित मुझे कण्ठस्थ है । मुझसे अनेक लोगों ने कुरान की तालीम लेकर बड़े-बड़े ओहदों को संभाल रखा है ।

तिस वास्ते तुमको डरत हैं, कोई न ल्यावे ताब ।
हम सवाल पूछत हैं, तिनका देओ जबाब ॥९७॥

स्वामी जी बोले इसलिए तो हमें आपसे डर लग रहा है कि कभी कोई भी आपके सामने ठहर नहीं सका । मेरे सवाल पूछने पर आप गुस्सा न करें । हम आपसे सवाल करते हैं, आप उसका जवाब दीजिए।

क्यों दुनियां की पैदाइस, लिखी बीच कुरान ।
समझ जवाब दीजिओ, है बात बड़ी फिरकान ॥९८॥

दुनियां की पैदाइश यानि इस संसार की रचना का क्रम कुरान में किस प्रकार लिखा है ? आप इस सवाल को समझकर उचित उत्तर दीजिए । क्योंकि कुरान का ये महत्वपूर्ण प्रसंग है ।

तब जवाब काजीएं दिया, हम क्यों कर कहें खिलाफ ।
बूढ़े हुए पढ़ते, हमारे दिल हैं साफ ॥९९॥

तब काजी ने कहा - ''हम कुरान के खिलाफ बात क्यों कहेंगे । कुरान को पढ़ते-पढ़ते मैं बूढ़ा हो गया हूं । इसे पढ़ कर हमारा मन पवित्र और साफ हो गया है'' ।

जो कदी ए कुरान, और भांत बोलें ।
तो तुम आगे हारहीं, दम ना मार सकें ॥१००॥

यदि कुरान में किसी और तरह से लिखा हो और मैंने वैसा उत्तर न दिया तो आपके सामने मैं अपनी हार मान लूंगा और अपने को बचाने के लिए कुछ करने का मुझे इख्तयार नहीं होगा ।

Nijanand App

पांच भांत की पैदाईस, लिखी अल्ला कलाम ।
खबर कोई ना पावहीं, पढ़ी खलक तमाम ॥१०१॥

इस दुनियां में इन्सान की पैदाइश का सिलसिला (क्रम) कुरान में पांच तरह से लिखा हुआ है । अनेक बार पढ़ने पर भी कोई इसको समझ नहीं पाता ।

तब कुरान आगे धरी, खोल देखो किताब ।
तिलकर रसूल में लिखा, आया नहीं जवाब ॥१०२॥

तब स्वामी जी ने कुरान खोल कर काजी के आगे रख दिया और उससे कहा आप कुरान को खोल कर तिलकर रसूल तीसरे सिपारे में इस प्रसंग को देख लीजिए । तब काजी उत्तर में कुछ नहीं बोल पाया।

कुंन सेती पैदा भई, ए जो आम खलक ।
एक कहे एक हाथ से, दो हाथों कहे हक ॥१०३॥

स्वामी जी ने ये भी कहा कुंन हो जा कहने से आम खलक जीवसृष्टि पैदा हुई । एक हाथ से मुहम्मद हजरत साहब हुए । दूसरे दो हाथों से दो स्वरूप रूह अल्लाह स्वरूप निजानन्द स्वामी देवचन्द्र जी तथा हकी सूरत स्वरूप श्री प्राणनाथ जी प्रगट हुए ।

और एक जमात को, ले आए उठाए इप्तदाए ।
और एक खिलकत और से, ए पांचों की पैदाए ॥१०४॥

रूहें, मोमिन, ब्रह्मसृष्टियों को रूह अल्लाह श्यामा महारानी परमधाम से खेल में लाए हैं । इसे मूल इप्तदा कहते हैं । और एक ईश्वरी सृष्टि फरिश्ते अक्षर धाम से संसार में आए हैं जिनको खिलकत की पैदाइश (ईश्वरी सृष्टि) कहते हैं । इस प्रकार पांच तरह की पैदाइश कुरान में लिखी है ।

तब पूछा अब्दुल रसूल को, तुम हो किन में ।
अब सांच बोलियो, तुम पैदाइस जिनसें ॥१०५॥

स्वामी जी ने दूसरा प्रश्न अब्दुल रसूल काजी से पूछा - ''आपकी पैदाईश इनमें से किस में हुई या आप अपने आप को किन में से गिनते हो । अब आप सच-सच कहना । आप किस तरह पैदा हुए''।

Nijanand App

तब काजी के दिल में, भई जो दुदली ।
तब जवाब आया नहीं, तब बात कही बिचली ॥१०६॥

ये सुनकर काजी बहुत घबरा गया, हैरान पशेमान (असमंजस) होकर जब उसे कोई रास्ता दिखाई नहीं दिया । कोई सही उत्तर नहीं सूझा तो बिचलाहट में कहने लगा ।

तब बलदिवान नें, कही ऐ मियाँ तुम ।
भूल के बात करत हो, छूटा वह हुकम ॥१०७॥

तब बलदीवान ने काजी को कहा - ओ मियां ! आप भूले पड़े हो इसलिए अशुद्ध उत्तर दे रहे हो । अगर आप आज उत्तर नहीं दे सके तो आज से कुरान पढ़ने वालों पर आपकी हुकूमत खत्म हुई, उस्तादपना खत्म हुआ ।

तब काजी कदमों लगा, किया सेजदा हक ।
हम तहकीक पहचानिया, ए बात बड़ी बुजरक ॥१०८॥

तब काजी बहुत शर्मिन्दा हुआ और दिल पाक साफ करके काजी ने श्री जी के कदमों में सजदा बजाकर कहा कि ए मेरे हजूर ! हमने आपको हादी आखरूल जमां इमाम मेंहदी साहिब के स्वरूप में पहचान लिया है । बेशक ये बात बहुत महान है ।

तब बल दिवान नें, काजी सों पूछी ए ।
मुसाफ सिर पर धर कहो, सांच बताओ जे ॥१०९॥

तब बलदीवान ने फिर काजी से कहा - कुरान को सिर पर रख कर कसम खाओ कि जो आप कह रहे हो, सत्य है । अब सच्ची बात ही मुंह से कहना ।

तब जवाब काजी दिया, मुसाफ सिर हमारे ।
जो हम झूठ बोलहीं, तो एही हमको मारे ॥११०॥

तब काजी ने कुरान को सिर पर रख कर कहा- "मैं इसी कुराने पाक की कसम खाकर कहता हूं। अगर हमने स्वामी प्राणनाथ जी को (आखरूल जमां इमाम मेंहदी को) झूट माना हो तो ये कुरान ही हमको मार डाले ।"

Nijanand App

ए तहकीक जमाने का खाविन्द, जो करी थी सरत ।
सो सरत आए पहुंची, फरदा रोज कयामत ॥१११॥

यह निश्चित ही आखरी जमाने के खाविन्द इमाम मेंहदी हैं । कुरान में महंमद साहब ने जो वायदा किया था । वही कल का दिन ११वीं सदी कयामत का दिन जागनी का दावा सत्य सिद्ध होता है ।

तब बलदिवान के, कछू सांच आई दिल में ।
पण्डितों से तो पूछ देखों, कोई चरचा करे इनसें ॥११२॥

अब कहीं जाकर बलदीवान जी के मन में विचार आया कि हकीकत में श्री प्राणनाथ जी के अंदर कुछ शक्ति है । फिर भी उसने विचार किया कि पण्डितों से भी इस प्रसंग की चर्चा करानी चाहिए । वह महान पण्डितो को खोज कर लाए । जिनसे श्री जी की चर्चा कराई ।

तब सुन्दर बल्लभं बद्री, और बुलाए पण्डित ।
तिनको लगा पूछने, ए बात कैसी इत ॥११३॥

बलदीवान ने सुन्दर, वल्लभ और बद्री पण्डित को श्री जी के साथ शास्त्रार्थ के लिए बुलाया । पण्डितों से कहा कि आप चर्चा करके देखिए । आपको इनकी बातें कैसी लगती हैं ।

बद्री को बुलाए के, महाराजें पूछी बात खरी ।
ए जो सवाल भागवत के, चित दे चरचा करी ॥११४॥

तब दूसरे दिन शास्त्रार्थ में श्री जी व बद्री पण्डित को विधिवत आदर सहित आसन पर बिठाया । स्वामी जी ने कुछ प्रश्न भागवत के लिखकर छत्रसाल जी को बद्री पण्डित से पूछने के लिए दिए । तब महाराजा छत्रसाल ने बद्री पण्डित को बुला कर स्पष्ट सीधी बातें पूछी । श्री कृष्ण जी के स्वरूप कितने हैं, इन प्रश्नों को लेकर बड़े ध्यानपूर्वक चर्चा हुई ।

तब बद्रीदास ने, प्रसन सुनें दे कान ।
ए बात श्री कृष्ण की, होए ना बिना भगवान ॥११५॥

बद्रीदास ने प्रश्नों को ध्यान से एकाग्रचित्त होकर सुना । उससे प्रश्नों के विषय में पूछा गया तो प्रश्नों को पढ़ने के पश्चात् बद्रीदास जी ने उत्तर दिया कि श्री कृष्ण के बाल स्वरूप और रास की अखंड लीला के इन रहस्यों का श्री कृष्ण अक्षरातीत पारब्रह्म के बिना कोई उत्तर नहीं दे सकता क्यों कि ये अखण्ड लीला श्री कृष्ण अक्षरातीत की ही है ।

Nijanand App

तब श्री महाराज नें, पाया बद्री पर सुख ।
रस रहया चरचा मिने, कहया न जाए मुख ॥११६॥

बद्रीदास पण्डित की इन बातों को सुन कर महाराजा छत्रसाल बड़े प्रसन्न हुए । छत्रसाल जी की ब्रद्रीदास से इन प्रश्नों पर ऐसी रहस्यमयी चर्चा हुई जिसका वर्णन नहीं हो सकता ।

आधी रात उपरान्त, घरों गया बद्री जब ।
सब पण्डितों मिल के, बातें पूछी तब ॥११७॥

आधी रात के बाद जब ब्रद्रीदास अपने घर आया । तब सभी पण्डितों ने मिलकर उससे शास्त्रार्थ में हुई चर्चा की बातें पूछी ।

कैसी तुम चरचा करी, कैसा दिया जवाब ।
मैं जथारथ बोलिया, उड़ाए दिया ए ख्वाब ॥११८॥

पण्डितों ने पूछा - आपने वहां कैसी चर्चा की ? उनके प्रश्नों के उत्तर तुमसे कैसे बन पड़े ? तब बद्रीदास ने उत्तर दिया - हमने वहां जो सच्चाई थी, वही कह डाली और चतुराई भरे ज्ञान को झूठ के समान समझकर छोड़ दिया ।

इन ख्वाब के आज लों, है तुमारे घर ।
फिटकार सबों नें दई, क्यों ना गए तुम मर ॥११९॥

पण्डितों ने कहा - आज तक तो हम इसी झूटे ज्ञान के सहारे ही जीते रहे और तुम भी इसी स्वप्न के ज्ञान के भरोसे जीवित हो । बद्रीदास, आपको धिक्कार है ! तुम वहीं पर मर ही क्यों नहीं गए ! (तुमको वहां भी स्वप्न के ज्ञान से ही बोलना चाहिए था) ।

जब बात रोपी तुम इनकी, फिर है तुमारा कोई ठौर ।
अब मारो उलटाए के, बात करो जाए और ॥१२०॥

आपने तो उनकी बातों की ही पुष्टि कर दी । अब हम सबका क्या महत्व रह जाएगा । अब तुम वहां जाकर पुनः अपनी बात बदल कर उन्हें हराओ।

हम देत सवाल बनाए के, लेके जाओ तुम ।
जाए के खंत करो, आवें मद्दत हम ॥१२१॥

हम लोग प्रश्न बनाकर आपको देते हैं । तुम उनको लेकर महाराजा छत्रसाल के पास जाओ और श्री प्राणनाथ जी से उनके उत्तर की मांग करो । हम आपकी सहायता के लिए वहां उपस्थित रहेंगे ।

Nijanand App

सवाल बनाए रात में, बिना जाने निसान ।
परियान कर उठे, प्रात करें पहिचान ॥१२२॥

पण्डितों ने बिना समझे विचारे रात को प्रश्न तैयार किए । उन पर मिलकर विचार-विमर्श किया । उन्होंने प्रातः श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान की परीक्षा लेने की योजना बनाई और उठकर अपने-अपने घर चले गए।

प्रात समय उठके, आया बद्री दरबार ।
बल दीवान को बात से, किया खबरदार ॥१२३॥

दूसरे दिन प्रातः होते ही बद्रीदास दरबार में आए । आते ही उसने बलदीवान को अपने आने के बारे में बताकर सावधान कर दिया ।

भई भेंट महाराज सों, अबही बाताँ करते और ।
तब पूछा महाराज ने, रात की बात गई किस ठौर ॥१२४॥

बलदीवान महाराजा छत्रसाल से मिले तो कहा ये लोग पुनः बात करना चाहते हैं । महाराजा ने उनसे पूछा - रात्रि में आपने जो कुछ कहा था, वह सब क्या हो गया ?

ऐ प्रस्न भागवत के, हम तो सब जानत ।
झूठी बातें बनाए के, करने लगे इत ॥१२५॥

तब पण्डितों ने महाराजा छत्रसाल जी से मिलकर कहा कि इन सब प्रश्नों के उत्तर तो हम जानते हैं। वह लोग उल्टे-सीधे प्रश्न बनाकर वाद-विवाद करने लगे ।

तब उस महाराज को, चढ़ी बड़ी रीस ।
कही बुन्देला इने गुरू ना करें, कोई न नवावें सीस ॥१२६॥

तब महाराजा छत्रसाल को पण्डितों पर बहुत क्रोध आया । उन्होंने सब बुंदेलों को सूचना दे दी कि आज से बुंदेला ठाकुरों में से कोई भी इन्हें गुरू नहीं बनाएगा और न ही कोई इनके चरणों में प्रणाम करना।

इनकी पटी सिर पर, अब बांधियों जिन कोए ।
बुन्देलों की जात में, इनको उठो न सोए ॥१२७॥

इन पण्डितों द्वारा कोई भी शुभ कार्य में अब पाग मत बंधवाना । बुंदेलों की जाति में कोई भी इनके आदर के लिए उठकर खड़ा नहीं होगा ।

Nijanand App

सुंदर बल्लभ बद्री, भले मिले कल माहिं ।
चौदह विद्या निपुन हैं, पर एकौ जानत नाहिं ॥१२८॥

सुंदर, वल्लभ, बद्री कलयुग में ऐसे पण्डित मिले हैं, जो संसार की चौदह विद्याओं का ज्ञान रखते हैं परन्तु इनको आत्म तत्व के ज्ञान का एक भी शब्द नहीं आता ।

फेर बलदीवान आगे, भई जो चरचा जोर ।
सब पण्डितों मिलके, मेरा चित दिया मरोर ॥१२९॥

बलदीवान से बद्री पण्डित की बहुत बातें हुई । उसने कहा सभी पण्डितों ने मिलकर मेरे चित्त को व्यर्थ में बदल दिया ।

जेर भए सब पण्डित, फते भई इसलाम ।
काफर स्याह मोंह होए के, ले गए अपने ठाम ॥१३०॥

इस प्रकार सभी पण्डितों ने अपनी हार मानी और श्री प्राणनाथ जी के द्वारा चलाए दीने हकीकी निजानन्द सम्प्रदाय की विजय हुई । सत्य परमात्मा को जान बूझकर झूठी माया के बदले में पूजा करने वाले पण्डित अपने काले मुंह लेकर शर्मसार होकर अपने घर चले गए ।

एक बात इत और भई, सब कुंवर ठाकुरों में ।
खरच राज की बकसीस देख के, धोखा भया मन में ॥१३१॥

थोड़े दिन ही शांति से बीते थे कि यहां पर एक और भयंकर बात हो गई । सब ठाकुरों के मन में सुंदरसाथ के खर्चे को देखकर ये विश्वास हो गया कि ये सब खर्चे श्री प्राणनाथ जी की चमत्कारी शक्ति से प्राप्त होते हैं ।

खरच इतसे पहुंचे नहीं, ए उठत है कहाँ से ।
है इनके पास रसायन, ए सबों जानी मन में ॥१३२॥

इतनी बड़ी समाज के खर्चे हेतु निर्वाह के लिए धन राजा के यहां से तो जाता नहीं हैं, फिर इनका खर्चा कहां से पूरा होता है । सब लोगों ने मन में ये विश्वास कर लिया कि प्राणनाथ जी के पास कोई न कोई रसायन अवश्य है ।

सिवाए एक महाराज के, सबके मन में बस गई ।
बरस तीन बीत गए, तब लग खरच की खबर ना भई ॥१३३॥

महाराजा छत्रसाल ने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं । उनके सिवाय सबके मन में रसायन की बात पक्की बैठ गई थी । श्री जी को पन्ना आए ३ वर्ष हो गए थे । तब तक इनके खर्चे की व्यवस्था की जानकारी किसी को न हो सकी ।

Nijanand App

तब एक दिन महाराज ने, पूछी श्री राज से एह ।
सबके मन में धोखो है, ए खरच होत है जेह ॥१३४॥

तब महाराजा छत्रसाल ने एक दिन ये बात स्वामी जी से आकर पूछी । उन्होंने कहा कि सब बुंदेलों के मन में कुछ गलत धारणा आ गई है कि सब सुंदरसाथ का खर्चा कैसे चल रहा है ?

तब फुरमाई श्री राज ने, आवत खरच साथ में सें ।
मेरता को साथ है, सो भेजत है हमें ॥१३५॥

तब श्री जी ने छत्रसाल जी से कहा, सुन्दरसाथ की हर प्रकार की सब सेवा मेड़ते के राजाराम और झांझन भाई जी की तरफ से आती है ।

तब महाराजा मन में, बहुत दलगीर भए ।
हम ब्रह्मसृष्ट के साथ में, अजूं भए ना सही नए ॥१३६॥

ये बात सुनते ही छत्रसाल मन में बहुत दुःखी हुए और मन में सोचा कि अभी तक मैं सच्चा सुंदरसाथ कहलाने योग्य नहीं हुआ ।

बहुत दलगिरी आई दिल में, माने न आपको साथ ।
अजहूं काम दीन का, आया न मेरे हाथ ॥१३७॥

महाराजा छत्रसाल जी मन में इतने दुःखी हुए कि अपने को सुन्दरसाथ मानने को भी तैयार नहीं थे। वह पश्चाताप की अग्नि में जल रहे थे कि आज तक सुंदरसाथ की सेवा का कार्य मेरे हाथ में नहीं आ पाया ।

विचार किया मन में, ए बात कहों जाए कित ।
दलगीर होए के प्रात से, पौढ़े घरों जाए तित ॥१३८॥

वह मन ही मन में विचार कर रहे थे कि ये बात किसको जाकर कैसे कहूं ? व्याकुल और दुःखी होकर प्रातःकाल से ही घर के एक कमरे में लेटे रहे ।

जब हो गए दो पहर, घर में रसोई भई तैयार ।
रानी तो उठाए ना सके, कह भेजी बलदिवान सो बाहर ॥१३९॥

जब दोपहर हो गई, भोजन तैयार हुआ । रानी भी उठाने में असमर्थ रहीं तो बलदीवान को बाहर से बुलवाया । महाराजा से बात करने की हिम्मत वो न कर सकीं ।

Nijanand App

आए बलदीवान चल के, जगाए श्री महाराज ।
तुम काहे होत दलगीर, सो कहो हमें आज ॥१४०॥

महारानी के बुलवाने पर बलदीवान चलकर आए और उन्होंने दरवाजा खटखटा कर पूछा- आप आज इतने दुःखी क्यों हो ? अपनी निराशा का कारण हमसे कहो ।

तब कही महाराज ने, नहीं कहवे की बात ।
तब कही बलदीवान ने, ए कही चाहिए साख्यात ॥१४१॥

तब महाराजा छत्रसाल ने कहा - यह बात किसी से कहने योग्य है ही नहीं । तब बलदीवान ने कहा, उस विषय में आपको साफ-साफ कहना ही पड़ेगा ।

तब महाराजे ए कही, हमारे मन में रहे एह ।
है इन पास रसायन, आज तहकीक करी हम तेह ॥१४२॥

बलदीवान जी के बहुत कहने पर महाराजा ने कहा - हमारे मन में ये भ्रान्ति बैठ गई थी कि स्वामी जी के पास कोई रसायन है जिससे वो खर्च चलाते हैं । आज इस बात का स्पष्टीकरण हो गया ।

ए आवत खरच साथ में से, ए सुन भयो दरद ।
हम कैसे सेवक इनके, हम पर गजब की रही न हद ॥१४३॥

सब सुन्दरसाथ के खर्चे के लिए सब रूपया-पैसा राजाराम झांझन भाई मेड़ते वाले सुंदरसाथ भेजते हैं। यह बात सुनकर मेरे मन में बहुत दर्द हुआ है । क्या हम श्री जी के साथी कहलाने योग्य हैं ? हमारे लिए तो ये बहुत जुल्म (कहर) की बात हो गई है कि हम आज तक उनकी कुछ सेवा भी नहीं कर सके।

तब बोले बलदिवान, ए बात है सहल ।
एक जागा मारिए, ताकी चौथ दीजे सब मिल ॥१४४॥

तब बलदीवान बोले कि यह बात तो सहज ही है । उनकी सेवा करने के लिए राज्य में एक और क्षेत्र जीतकर बढ़ा लें । कर रूप से मिलने वाली राशि का चौथा हिस्सा श्री प्राणनाथ जी की सेवा में अर्पित कर दें । ऐसा करने से मन को शांति हो जाएगी ।

ए बात पक्की करके, लिखाए लई महाराज ।
तब सब साथ में आए के, अरज करी आगे श्री राज ॥१४५॥

बलदीवान जी के दिए हुए सुझाव को छत्रसाल जी ने उनसे लिखित रूप में लेकर निश्चय कर लिया। तब सब सुन्दरसाथ के बीच श्री जी की सेवा में पहुंच कर ये विनती की ।

Nijanand App

आवे साथ परदेस को, और रहे जो इत ।
तिन सब की सेवा की, मोहे है गरज करों नित ॥१४६॥

हे मेरे धाम के धनी ! बाहर से आने वाले और यहां रहने वाले सब सुन्दरसाथ की सेवा आज से मुझे बख्श दीजिए ।

और करी अरज हजूर में, करो इलाज बाहिर निकलने को ।
सब ठाकुरों मिल विचार कियो, एक जागा मारने को ॥१४७॥

और ये भी अर्ज की कि हे मेरे स्वामी ! हे मेरे धाम धनी ! हे मेरे मेहबूब ! आप भी हमारे साथ बाहर चलने का उपाय कीजिए । हम सब ठाकुरों ने मिलकर अपने राज्य में एक और क्षेत्र जीत कर मिलाने का विचार किया है ।

हमको बड़ी उम्मीद है, आप होओ असवार ।
चले आगे असवारी में, हम जलेब में खबरदार ॥१४८॥

मेरी बहुत चाहना है कि आप हमारे साथ सवार होकर चलें। आप सबसे आगे सवारी में चलें और मैं सब सेना को लेकर आपका सिपहसालार बनकर सावधानी पूर्वक चलूंगा ।

सम्बत सत्रह सौ तेतालीसे, असवारी करी जब ।
हस्ती पर चढ़ाए के, आगे सेना चलाई तब ॥१४९॥

सम्वत् १७४३ (१६८६ ई०) में श्री जी के लिए सवारी की तैयारी की गई । उन्हें हाथी पर आसीन कराया गया और आगे-आगे महाराजा छत्रसाल जी सेना को लेकर चले ।

राठ खड़ोत जलालपुर, नजीक कालपी पहुंचे ।
इत मुल्ला काजी सैयद, सब जमा किए ॥१५०॥

राठ, खड़ौत, जलालपुर को अपने राज्य की सीमा में मिलाते हुए काल्पी के समीप जा पहुंचे । यहां के मुल्ला काजी और सैयद लोगों को एक स्थान पर इकट्ठा किया ।

तिनसों कुरान हदीसों की, चरचा करी जब ।
जेर हुए इसलाम में, सबों मेहेजर लिख दिया तब ॥१५१॥

उनसे श्री जी ने कुरान हदीसों के अनेक प्रसंगों पर चर्चा की । उनमें से कोई भी कुरान व हदीसों के गहन विषय हकीकत और मारफत के छिपे रहस्यों को न बता पाए तो उन्होंने प्राणनाथ जी के दीने इसलाम निजानंद सम्प्रदाय को स्वीकार कर लिया और इस बात को लिख कर प्रमाणित कर दिया कि श्री प्राणनाथ जी ही आखरूल जमां ईमाम मेंहदी हैं ।

Nijanand App

ए हम तहकीक किया, खाविन्द जमाने का ।
हम अपनी आंखों देखिया, जो कुरान हदीसों लिखा ॥१५२॥

काजी, मुल्ला लोगों ने महजरनामा (ताम्र पत्र पर) लिख दिया कि कयामत के जाहेर होने के समय आने वाले आखरूल जमां ईमाम मेंहदी स्वरूप एक प्राणनाथ जी ही हैं । कुरान हदीसों में उनके आने के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणी लिखी गई है, हमने अपनी आंखों से उनके साक्षात् दर्शन कर लिए हैं ।

सो पहुंचाया सरे तोरे को, कानों सुन्या सुलतान ।
सुनके सिर नीचा किया, छूटा नहीं गुमान ॥१५३॥

ये लिखित प्रमाण-पत्र, ये महजरनामा शरा के बादशाह औरंगजेब के पास पहुंचाया गया । उसने सुनकर शर्म के मारे सिर तो झुका लिया, पर उसके दिल का गरूर (अभिमान) दूर नहीं हुआ ।

मुनकरी रसूल सों, लिखी बीच कुरान ।
सो क्यों ईमान ल्यावहीं, जो मोहर लिखी दोऊ कान ॥१५४॥

कुरान में लिखा है कि जिन लोगों ने महंमद साहब के समय में उनकी बातों से मुनकरी की, । उनके दोनों कानों में मोहर लगी है इसलिए वह सच्ची बातों पर कभी विश्वास नही लाएंगे ।

सातों निसान कयामत के, जाहिर किए जब ।
सुन के सिर नीचा किया, मुनकर हुए तब ॥१५५॥

इन पत्रों में कयामत के समय प्रगट होने वाले सात निशानों की भी व्याख्या की गई थी । उन्हें देखकर औरंगजेब ने लज्जित होकर सिर झुका लिया । वह शरा की पैरवी और हक की मुनकरी न छोड़ सका, इसलिए विमुख ही रहा ।

दाभा हुई जाहिर, उगा सूर मगरब ।
लड़ा दज्जाल अहम्मद सों, बिन बातिन न देखा तब ॥१५६॥

पत्र में लिखा कि कयामत के जाहेर होने के समय दाभ-तूल-अर्ज जानवर पैदा होगा और वह जानवर की प्रवृत्ति (स्वभाव) वाले मानवों के रूप में जाहिर होगा । पश्चिम से खुदाई इल्म का सूर्य निकलेगा, जो मुसलमानों के लिए अंधेरा ही बना रहे और खुदा से मुनकरी तथा फानी दुनियां के लोभ-लालच में डालने वाला दज्जाल, अबलीस झूठे लोगों के दिलों पर बैठकर ईसा रूहअल्लाह देवचन्द्र जी और ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के सामने सत्य ज्ञान के विरूद्ध संघर्ष करता ही रहेगा । वह सब अब हो ही रहा है । आत्म जागृत न होने के कारण से या परमधाम का अंकूर न होने के कारण से शरीयत के लोग इसको न पहचान सकेंगे ।

Nijanand App

हुए आजूज माजूज जाहिर, बेटे याफिस के ।
खाने लगे सब को, मरगी पहुंची ए ॥१५७॥

कयामत के सात निशानों में से एक निशान ये भी है कि आजूज माजूज जो याफिस (शंकर जी) के पुत्र कहलाते हैं वह दिन रात काल के रूप में संसार के जीवों को नष्ट करेंगे । महामारी (मिर्गी की) के रूप में आजूज माजूज ने प्रगट होकर रामनगर में बहुतों को खाया ।

जब इमाम जाहिर भए, हजरत ईसा साथ ।
मोमिन बन्ध छुड़ाए के, पकड़े नीके हाथ ॥१५८॥

जब ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रगट हुए, तो उनके साथ हजरत मुहम्मद साहब तथा ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्र जी के तन में प्रगट हुए अर्थात् मुहम्मद साहब का कलमा और श्यामा जी के द्वारा लाये हुए तारतम ज्ञान की शक्ति श्री जी के अंदर विराजमान हुई । मोमिनों को झूठे मोह माया के कुटुम्ब कबीले के बंधनों से छुड़ाकर उनको अपने चरणों में लिया ।

असराफीलें आए के, गाया इत कुरान ।
नीके मोमिन सुनत है, इनों भई पहिचान ॥१५९॥

असराफील अक्षर की बुद्धि ने श्री जी के अंदर प्रगट हो कर कुरान के रहस्यों को संसार के सामने कुलजम सरूप की वाणी के रूप में रखा । जिस वाणी को सुन्दरसाथ ध्यान से सुनते हैं इसलिए उनको हकीकत और मारफत के ज्ञान की पहचान हो गई ।

हकीकत मारफत के, खोल दिए दरबार ।
ए मेहर मोमिनों पर, सो आवे नहीं सुमार ॥१६०॥

परमधाम के हकीकत और मारफत के ज्ञान से क्षर से आगे अक्षर और अक्षरातीत के परमधाम की पहचान कराकर प्राणनाथ जी ने परमधाम पहुंचाने का द्वार खोल दिया । श्री राज जी महाराज की ये अपार कृपा मोमिनों पर हुई जिसका कोई शुमार नहीं है ।

इहां से असवारी करके, सिंउड़े पहुंचे जब ।
बसन्त सुरखी आए मिल्या, कदमों लगा तब ॥१६१॥

काल्पी से सवारी पर सवार हो कर श्री जी सिंउड़े ग्राम पहुंचे । वहां चित्रकूट के राजा वसन्तसुर्खी ने आकर चरणों में प्रणाम किया ।

Nijanand App

चित्रकूट को ले चल्या, पर जुदा रख्या आप ।
तो संसार की लहर का, कबूल हुआ ताप ॥१६२॥

वह श्री जी को चित्रकूट ले गए किन्तु स्वयं सुन्दरसाथ में शामिल नहीं हुए, दूर ही रहे । इसलिए संसार रूपी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की लहरों में डूब कर आवागमन के चक्कर में फंसा रहा ।

श्री राज चले चित्रकूट को, लिया महाराजे दिल में ।
सेवा में भंग होत है, कोई इलाज करो इनसें ॥१६३॥

श्री जी ने जब चित्रकूट के लिए प्रस्थान किया तो महाराजा छत्रसाल जी ने मन में विचार किया कि इससे तो मेरे सेवा - धर्म में विघ्न पड़ रहा है इसलिए इसका कोई उपाय करना चाहिए ।

तब सेवा के वास्ते, पहुंचाया सब साथ ।
कुंवर ठकुराइने सबे, सोंपे श्री राज के हाथ ॥१६४॥

तब महाराजा छत्रसाल जी ने स्वामी जी की सेवा करने के लिए सब सुन्दरसाथ को चित्रकूट भेज दिया और अपनी तीनों रानियों को भी श्री जी की सेवा में सौंप दिया ।

एक बरस तहां रहे, इत खोले अल्ला कलाम ।
श्री राज रोसनी जाहिर करी, खुल गए सब ठाम ॥१६५॥

चित्रकूट में श्री जी ने एक वर्ष रह कर कुरान के छुपे भेदों के रहस्यों का स्पष्टीकरण किया । श्री राज जी महाराज द्वारा भेजे कुरान के ज्ञान को ''बडा कयामतनामा'' नाम के ग्रन्थ में जाहिर किया । कुरान के सभी रहस्य खुल गए ।

तब श्री राजें लिया दिल में, ए खबर करी महाराज ।
चाहिए इन मेहर से, खुसाल होवें आज ॥१६६॥

श्री जी ने अब निश्चय किया कि कुरान के इन रहस्यपूर्ण प्रसंगों के खुलने की सूचना छत्रसाल जी को देनी चाहिए । श्री राज जी महाराज की अपार कृपा से कुरान के भेदों का ज्ञान खुल जाने की जानकारी सुन कर छत्रसाल जी बहुत आनन्द में विभोर हो जाएंगे ।

तब ओरछे के राजा ने, लिया खटोला ए ।
लगी फिटकार तिनको, मौत हुआ तिन से ॥१६७॥

उसी समय ओरछे के राजा ने महाराजा छत्रसाल के राज्य का खटौला ग्राम अपने अधिकार में कर लिया । राजा को धिक्कार मिली और राजा का स्वर्गवास हो गया ।

Nijanand App

फेर मिठू पीरजादे ने, बुरी करी नजर ।
पांच हजार असवार ले दौड़ा, राह में भई फजर ॥१६८॥

उसके बाद मीठू पीरजादे ने महाराजा छत्रसाल जी को पकड़ने की बुरी भावना लेकर आक्रमण किया और उसने ५००० सैनिकों को लेकर रात को चढ़ाई कर दी । प्रातः काल होते ही उसकी सेना का सफाया हो गया ।

तिनको मारा चमारों ने, फिरा मोंह स्याह ले ।
हुई लानत संसार में, काफर होने के ॥१६९॥

जहां से उसने आक्रमण किया था, उसी गांव के चमारों ने मिलकर उसकी सेना को मार डाला । वह बेचारा लज्जित होकर वापिस बादशाह के पास दिल्ली लौट गया । निजानन्द सम्प्रदाय का विरोध करने वाले खुदा के मुनकर लोगों को दुनियां में लानत मिली ।

और पुन जिन जिन करी, तिन तित ही पाई सजा ।
ए काफर लिखे कुरान में, एही लिखी ताले कजा ॥१७०॥

और श्री प्राणनाथ जी के सुन्दरसाथ को जिस-जिस ने जहां-जहां कष्ट पहुंचाया । उसे वहीं उसी समय अपनी करनी के फलस्वरूप दण्ड मिला । ऐसे लोगों को कुरान में काफर कहा है । ऐसे लोगों के भाग्य में संसार में शर्मसार होने, फिटकारे जाने एवं दुःख सहन करने की सजा लिखी है ।

महामत कहें सुनो साथ जी, यह कीमत की बात ।
जब आए तुम परना मिने, तब की ए विख्यात ॥१७१॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे मेरे प्यारे सुंदरसाथ जी ! ये कयामत के समय की बड़ी अनमोल बातें हैं । इसे ध्यान से सुनिए । जब आप सब श्री पद्मावती पुरी धाम पन्ना में आए थे, ये उस समय का वृत्तान्त है ।

(प्रकरण ६०, चौपाई ३५२७)

अब कहूं बीतक परना की, जब बैठे इत आए ।
दज्जाल लगा पुकारने, सो तुमें कहूं बनाए ॥१॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! अब हम आपको पन्ना जी की बीतक सुनाते हैं । अब धाम के धनी जी कहते हैं कि जब हम पन्ना जी पधारे तब दज्जाल (अबलीस) की शक्ति ने परमात्मा से मुनकरी करने वाले लोगों के मन में बैठकर अनेकों प्रकार की निंदा की और अनर्गल बातें की । अब वो बातें बताते हैं ।

Nijanand App